

उत्तराखण्ड के हलद्वानी में हिसा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखण्ड के हलद्वानी में एक अवैध मदरसे में तोड़फोड़ के बाद हिसा भड़क गई थी।

मुख्य बिंदु:

- नगर नगिम द्वारा यह वधिवंस न्यायालय के आदेश के अनुसार किया गया था, जिसमें मदरसे को **सरकारी भूमि पर अतिक्रमण घोषित** किया गया था।
- वधिवंस से दो समुदायों के बीच **वैरिध और झड़पें शुरू हो गईं**, जिसके परिणामस्वरूप पुलिस कर्मियों सहित कई लोग घायल हो गए।
- राज्य सरकार ने आगे की हिसा को रोकने के लिये हलद्वानी और अन्य संवेदनशील इलाकों में **मैक्रफ्यू** लगा दिया तथा **देखते ही गोली मारने का आदेश (Shoot-at-sight)** जारी कर दिया।
- **देखते ही गोली मारने का आदेश (Shoot-at-sight Order):**
 - यह एक ऐसा शब्द है जो एक ऐसे आदेश को संदर्भित करता है जो पुलिस या अन्य सुरक्षा बलों को आदेश का उल्लंघन करने वाले **किसी भी व्यक्ति को** बिना किसी चेतावनी या गरिफ्तार करने के प्रयास के गोली मारने का अधिकार देता है।
 - इस आदेश का **उपयोग केवल अत्यंत दुर्लभ और खतरनाक स्थितियों में किया जाता है**, जब अधिकारियों को लगता है कि सार्वजनिक शांति तथा सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा है एवं जब घातक बल बलिकुल आवश्यक है।
 - कुछ कानूनी प्रावधान जो देखते ही गोली मारने के आदेश जारी करने की अनुमति देते हैं:
 - **दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (CrPC) की धारा 46 (2)** जो गरिफ्तारी का वैरिध करने या भागने वाले व्यक्ति को गरिफ्तार करने के दौरान बल के प्रयोग को सक्षम बनाती है।
 - **CrPC की धारा 144**, जो आदेश जारी करने के माध्यम से "आशंकित खतरे" या उपद्रव के तत्काल मामलों से निपटने के दौरान व्यापक शक्तियों के उपयोग को सक्षम बनाती है।
 - **भारतीय दंड संहिता, 1860 (IPC) की धारा 81**, ऐसे कार्य से संबंधित है जिससे अपहानि होने की संभावना है, लेकिन आपराधिक आशय के बिना किया गया है और अन्य अपहानि को रोकने के लिये किया जाता है।
 - **IPC की धारा 76** ऐसे कृत्यों से छूट देती है, यदि ऐसा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो स्वयं को ऐसा करने के लिये कानून द्वारा बाध्य मानता है।